श्रद्धांजलि

स्वर्ग विभूति श्रीमती चैनाबाई जैन (तारबाबू)

जन्म :1936 * देव लोक गमन: 21/3/2021

पति स्वगीय श्री सुगम चंद जैन (तारबाबू) जबलपुर

21 मार्च 2021 अष्टानिका महापर्व के ब्रह्म मुहूर्त में जाप करते हुए, (बिना किसी संक्रमण के) सहज भाव से आपका देवलोक गमन हो गया। **"बाई"** आपका कर्मठ व्यक्तित्व सदैव हमारे स्मरण मै सुसज्जित रहेगा आपके आदर्शों का हम सभी परिजन अनुसरण करते रहेंगे ।

नमनकर्ता :

पुत्र व पुत्रवधु : डॉ. निधि–सुनील जैन

पुत्री–दामाद : श्रीमती उषा–अक्षय, श्रीमती लता–शंकर, श्रीमती सरला–नरेन्द्र

पौत्र एवं पौत्री : अंकुर, आकाश, तनिष्क, तान्या, शैली, शुभ्नय, सुविधि, सात्विकी, अविरल एवं स्नेहजन

प्रतिष्ठान

*** एस.सी. इंटरप्राइजेस * एस.के.पी. इंटरप्राइजेस * अंकित एसोसिएट्स**

471, तारबाबू निवासी, लाल कुआं, हनुमानताल, जबलपुर (म.प्र.) 482002

मो.: 9827280823, 9407021823, 9644786927

माँ

माँ तेरी याद, ये उदासी और मैं
शायद आगे बस यही लिखा है किस्मत मे
फिर दिल का गभड़ा जाना और आँखो का भर आना
अब कोई नही है जो निस्वार्थ हो अपना दुनियाँ मे

हा मैं माँ कई बार अपने स्वार्थ से याद करता हूँ
पर कई बार सिर्फ तेरा ना होना खलता है
एक तुम्हे बचा ना पाने का सवाल
मेरे सीने मे घाव की तरह पलता है
मैं खुद अपने हर फैसले पर गलत लगता हूँ
मै अपनी नजरो मे तेरा बस गुनाहगार लगता हूँ
माँ मै अभी भी बहुत छोटा हूँ
जादू, चमत्कार पर विश्वास रखता हूँ
माँ मै आज भी तेरे लोटने की आश रखता हूँ

माँ

जितने छण उतने सवाल
करते अंतर-मन पर गहन प्रहार
क्यो वैसा नही किया कुछ उपाय
क्यो क्यो शशांक तुम माँ को नही बचा पाय
रखता हूँ खुद से गिलानी भाव
उसके ऊपर माँ तेरा अभाव
सहन नही ये अपराध भार
कैसे लोटा पाये माँ तेरा अभार
माँ बिन होता जीवन असार
संसार छोड़िए भगवान भी लगता बेकार
माँ बस यही पुकार तुम सीग्र आव
तब ही सब भरेंगे ये तीव्र घाव
उसके अलावा रूचता न कुछ उपाय
माँ तुम दर्श दो, तो कुछ सुकून आय
चरणो मे शीश धर, हम जब क्षमा पाय
तब कही हृदय का कुछ भार घटा पाय

भावभीनी श्रद्धांजली

जन्मतिथि
24.08.1958

देवलोक गमन
23.04.2021

परम आदरणीय, उत्कृष्ट श्राविका **श्रीमती प्रभा देवी जैन** का देवलोक गमन दिनांक 23–4–2021 को हो गया। आप मध्यप्रदेश ओरछा में शासकीय अध्यापिका रही। आप धार्मिक एवं आध्यात्मिक दोनों में निपुण थी। आप ने अपने जीवन में बहुत सारे व्रत किये । बचपन से ही आपने श्राविका बनने में कोई कसर नहीं छोड़ी, अपने घर पर रहते हुए भी माताजी जैसी क्रियाओं का पालन करती रही तथा औरों को भी उपदेश धर्म के देती रही । आपने कई बार शिखरजी की यात्रा एवं कई तीर्थ वंदना बड़े ही श्रद्धा भाव से किये । आपको पावागिरी तीर्थ क्षेत्र से अत्यंत लगाव था । आप परिवार एवं समाज के लिए हमेशा अग्रणी रहती थी । आप मिलनसार व्यक्तित्व की धनी थी । आप जखोरिया परिवार में जन्मी तथा भंडारी परिवार में अपने दायित्व का निर्वाह करते हुए आज हम सब के बीच से चली गई और हम कुछ नहीं कर पाये ।

शोकाकुल परिवार – पति : श्री कैलाशचंद्र जैन

*** पुत्र :** निशांक जैन, शशांक जैन *** देवर :** वीरेंद्र–आराधना जैन बबीना, ओमप्रकाश–कुसुम जैन भेल झाँसी, देवेंद्र–सुमन जैन बबीना

*** बड़ी मम्मी :** कमल जैन, दिव्या जैन, अभिषेक पारस जैन एवं समस्त शोकाकुल भण्डारी परिवार

प्रिय माताजी को कविताओं के माध्यम से श्रद्धापूर्वक नमन करते है
उनके प्रिय पुत्र इंजी. शशांक जैन

माँ

मै मतलबी स्वार्थी पापी हूँ।
हा माँ मै तेरा अपराधी हूँ ।।

माँ हर वक्त मे साथ रही मेरे ।
हर दर्द को बांटती रही मेरे ।।
जब दर्द माँ तुम रही थी सहने ।
आश से भरकर मुझसे लगी कहने ।।
मैने सुन कर भी कुछ सुना नही ।
कोई उपचार भी गुना नही ।।
जब मुझसे भी आश छूट गई ।
माँ तुम अन्दर से टूट गई ।।
मै कोई आश बधा न सका ।
क्यो पास अपने बुला न सका ।।
वक्त पर काम आ न सका ।
साथ तेरा निभा न सका ।।
बस अपने मे ही व्यस्त रहा ।
निज सुख मै ही मस्त रहा ।।
निरन्तर बेटे के कर्तव्य से भागा हूँ।
व्यथा रोता कि मै अभागा हूँ।।
मै मतलबी स्वार्थी पापी हूँ।
हा माँ मै तेरा अपराधी हूँ ।।

माँ

क्या हो उस व्यक्ति का,
जो भगवान भरोसे चलता हो
और भगवान से भरोसा उठ जाऐ ।

क्या हो उस आत्मा का,
जो नित परमात्मा को जपता हो
और कर्मो से मात खा जाऐ ।

क्या हो उस बेटे का,
जो हर बात मे माँ- माँ कहता हो
और साथ उसी का छूट जाऐ ।

क्या हो उन आँखो का,
जिसने कभी न दुख देखे हो
और वो दुख के प्रगण्ड रूप से घिर जाऐ ।

क्या हो उस सीने का,
जो कभी डरा नही कही झुका नही
और अब वो हर पग पर घबड़ा जाऐ ।

पता – **भंडारी साड़ी हाउस**, मेन रोड़, आत आरामशीन, भेल, झाँसी